ज्योतिर्गमय

" मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामः "

श्रेया लिंगवाल, ८ ब, पंचशिला सदन

आत्मानं विद्धि

अंक ३४ मार्च २०२३, फाल्गुन मास, विक्रम संवत् २०७९

मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयासः

" महर्षि- वाल्मीकि: - आदिकाव्यस्य रामायणस्य रचनाकार:"

आदिकवि: महर्षि- वाल्मीकि: प्रथम काव्यस्य रामायणस्य कर्ता अस्ति। अयम् आदिकविरित्युच्यते। अस्य पिता प्रचेता:। रत्नाकर: इति वाल्मीके: मूलं नाम। प्रचेतस: पुत्र: इति कारणेन प्राचेतस: इति अस्य अपरं नाम। जन्मना अयं व्याध: आसीत्। एकदा मार्गे नारदमहर्षि:समागत:। नारदमहर्षिं दृष्ट्वा चौर्यं कर्तुं रत्नाकर: तत्सकाशं गतवान्। रत्नाकर: यथार्थमवगच्छति। ज्ञानोदय: सञ्जायते।

रावणवधानन्तरं रजकस्य वचनं श्रुत्वा रामेण सीता परित्यक्ता। तस्मिन्नवसरे वाल्मीकिमुने: आश्रमे सीता आश्रिताऽभूत्। आश्रमे एव कुशलवयो: जन्म अभवत्। बालकयो: शस्त्राभ्यास: शास्त्राभ्यासश्च वाल्मीकिमुनिना एव कारित:। अपि च बालकौ समग्रं रामायणं कण्ठस्थीकृतवन्तौ।

एकदा वाल्मीकि शिष्येण भारद्वाजेन सह स्नानार्थं तमसानदीं प्रति गतवान् आसीत्। स्वप्रियतमस्य वियोगेन बहु दु:खितां पक्षिणीं दृष्ट्वा आर्द्रचित्त: वाल्मीकि: झटिति तस्मै व्याधाय शापं प्रायच्छत्। तस्य मुखात् शाप: श्लोकरूपेण नि:सृत:।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधी: काममोहितम् ।।

- माहिरा रावत, 8 ब
पंचशिला सदन

प्रेरणा बड़थ्वाल, ७ अ, नालन्दा सदन

"नमामि रामं रघुवंश - नाथम्"

नीलाम्बुजश्यामल- कोमलांगम्
सीता- समारोपित- वामभागम्।
पाणौ महासायक- चारु-चापम्
नमामि रामं रघुवंश- नाथम् ।।

भवन्त: सर्वे जानन्ति यत् सीता जनकस्य पुत्री आसीत्।रामश्च राजा - दशरथस्य पुत्र: आसीत्।पितु: वचनं पालयितुं श्रीरामचन्द्र: लक्ष्मणेन सीतया च सह वनम् अगच्छत्। ते पंचवट्याम् एकस्मिन् पर्णकुटी थे अवसन्।एकदा तत्र एक: स्वर्णहरिण: आगत:। सीता तं प्राप्तम् ऐच्छत्।सीतायै स्वर्णमृगम् आनेतुं श्रीरामचंद्र: पर्णकुटीरात् बहिर् अगच्छत्।दूरात् भ्रातु: आह्वानं श्रुत्वा लक्ष्मणोऽपि बहिर् अगच्छत्।तदा रावण: ऋषिवेषेण तत्र आगत:।यदा रावण:आगत: तदा सीताया:निकटे लक्ष्मण: न आसीत्।रावण: सीताम् लंकाम् अनयत्।

श्रीराम: लक्ष्मण: च प्रत्यागत्य पर्णकुटीरे सीतां न अपश्यताम्।राम: सीतायां गम्भीरं स्निह्यति स्म। अत: तम् बहुदु:खम् अभवत्।हे सीते! त्वं कुत्र असि? इति स: उच्चै: आहूयत किन्तु कोऽपि पुकारं न अश्रृणोत्।राम रावणयो: मध्ये भीषणं युद्धम् अभवत्।राम: रावणं मारयित्वा सीतां स्वराज्यम् अयोध्यां प्रत्यानयत् एवं असत्ये सत्यस्य विजय: अभवत्।

"सत्यमेव जयते"

- अनीषा रावत, १२वीं, नालन्दा सदन

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम...

मर्यादा पुरुषोत्तम का अभिप्राय क्या है

रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलय: सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर।।

मर्यादा पुरुषोत्तम संस्कृत का शब्द है। मर्यादा का अर्थ होता है सम्मान और न्याय परायण, वहीं पुरुषोत्तम का अर्थ होता है सर्वोच्च व्यक्ति। जब ये दोनों शब्द जुड़ते हैं तब बनता है सम्मान में सर्वोच्च। श्री राम ने कभी भी अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। उन्होंने सदैव अपने माता पिता और गुरु की आज्ञा का पालन किया। साथ ही अपनी समस्त प्रजा का भी ख्याल रखा। वे न सिर्फ एक आदर्श पुत्र थे बल्कि आदर्श भाई, पति और राजा भी थे।

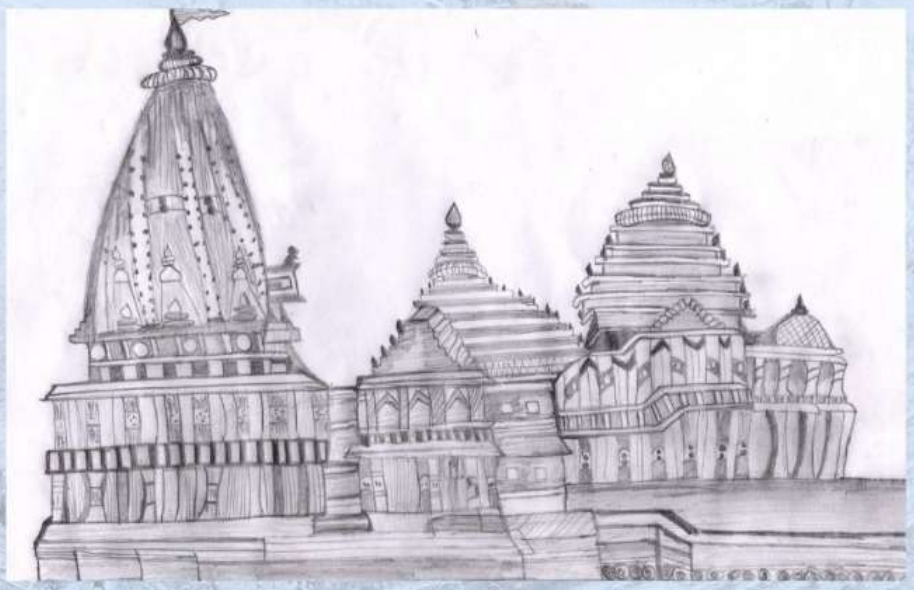

तानिया पासवान, ७ ब, पंचशिला सदन

क्यों कहा जाता है श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम :-

श्री राम अपने सभी भक्तों को बहुत ही प्रिय हैं और सभी उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। इतना ही नहीं श्री राम अपने परिवार और पूरे अयोध्या में भी सबके चहेते थे क्योंकि वे अपने सभी कर्त्तव्यों का पालन पूर्णता के साथ करते थे। श्री राम हर रूप में सभी के लिए एक आदर्श थे।

एक पुत्र के रूप में श्री राम :-

श्री राम राजा दशरथ के पुत्र थे और अयोध्या के राजकुमार। इस संसार में जहां भाई बहन संपत्ति के लिए आपस में ही लड़ रहे हैं, वहीं श्री राम ने अपने भाई भरत के लिए पूरा अयोध्या राज्य त्याग दिया था जब उनकी सौतेली माता कैकेयी ने उन्हें वनवास जाने का आदेश दिया था। हालांकि श्री राम के पिता राजा दशरथ ऐसा कभी नहीं चाहते थे लेकिन कैकेयी को दिए हुए अपने वचन के कारण वे विवश थे। अपने पिता के वचन को निभाने की खातिर श्री राम ने वनवास जाने का निर्णय लिया था और चौदह वर्षों तक अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन में रहे थे। यह इस बात का प्रमाण है कि वे किसी भी हालत में अपने माता- पिता का अनादर नहीं करना चाहते थे।

श्री राम एक भाई के रूप में :-

श्री राम के तीन भाई थे भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। तीनों अपने बड़े भाई का बहुत आदर करते थे। श्री राम इन तीनों के लिए एक आदर्श थे। राम जी के वनवास जाने के पश्चात सारा राजपाट भरत को सौंप दिया था लेकिन फिर भी अपने छोटे भाई के प्रति उनका प्रेम कम नहीं हुआ। वनवास के दौरान जब भी भरत राम जी से मिलने आते श्री राम हमेशा एक बड़े भाई की तरह उनका मार्गदर्शन करते।

श्री राम एक पति के रूप में :-

श्री राम हमेशा अपने कार्यों में व्यस्त रहते थे। कभी वे ऋषि मुनियों के साथ मिलकर अपने राज्य की उन्नति पर चर्चा करते तो कभी अपने भक्तो को दानवों के अत्याचारों से मुक्त कराने में लगे रहते थे। किन्तु इतनी व्यस्तता के बावजूद वे अपनी पत्नी देवी सीता का पूरा ध्यान रखते थे। वे उनकी सुरक्षा को लेकर इतने गंभीर रहते थे कि उन्होंने माता सीता को आदेश दिया था कि उनकी गैर हाजिरी में वे कहीं बाहर न निकलें। वनवास के दौरान एक दिन जब माता सीता ने सोने के हिरण की मांग की तो श्री राम उनकी इच्छा पूर्ति के लिए अपनी कुटिया से बाहर गए। तब उन्होंने लक्ष्मण जी को माता सीता की रक्षा करने के लिए कहा। लक्ष्मण जी ने एक रेखा खींच कर अपनी भाभी से अनुरोध किया कि वे इसे पार करके बाहर न आएं। इतने में रावण एक साधु का वेश धारण कर वहां पहुंच गया और माता सीता से भिक्षा मांगने लगा जैसे ही माता लक्ष्मण रेखा लांघ कर बाहर निकली रावण ने उनका अपहरण कर लिया।

श्री राम एक राजा के रूप में :-

श्री राम एक आदर्श राजा थे। कहा जाता है कि वनवास के बाद जब वे अयोध्या के राजा घोषित हुए तब उनके राज्य में कभी कोई चोरी, डकैती नहीं होती थी और न ही कोई भी भूख से मरता था। साथ ही उनके अंदर निर्णय लेने की क्षमता गजब की थी। जब कुछ लोगों ने देवी सीता के चरित्र पर उंगली उठाई और कहा कि उन्हें वापस वनवास भेज दिया जाए तो श्री राम के लिए यह निर्णय लेना बहुत ही कठिन था लेकिन फिर भी उनके लिए अपने रिश्तों से ज़्यादा उनकी प्रजा मायने रखती थी इसलिए उन्होंने अपनी प्रजा को हमेशा ज़्यादा महत्त्व दिया। इस तरह श्रीराम एक मर्यादा पुरुषोत्तम राजा कहे जाने लगे। श्रीराम जन्मोत्सव रामनवमी पर हम सभी उन्हें नमन करते हैं और आप सभी देशवासियों को अपनी प्रिय पत्रिका "ज्योतिर्गमय " के माध्यम से रामनवमी की शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।

- प्राची पांडे १२वीं नालन्दा सदन

संस्कृत - सूक्तय:

नैतिक शिक्षा तथा जीवनमूल्यों की शास्त्रीय बातें

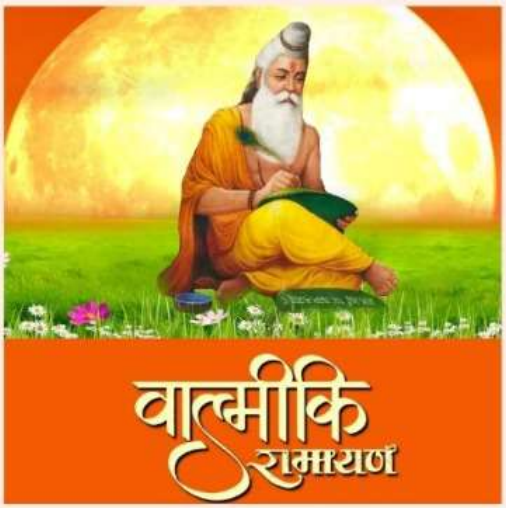

१.य: क्रियावान् स पंडित: - नीतिमंजरी
जो क्रियाशील हो वही विद्वान् है।

२.यथा राजा तथा प्रजा
जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है।

३.यतो धर्मस्ततो जय: - महाभारत
जहां धर्म होता है वहां विजय होता है।

४.यत्नवान् सुखमेधते - महाभारत
प्रयत्नशील मनुष्य सुख प्राप्त करता है।

५.यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन: - श्रीमद्भगवद्गीता
बड़े लोग जैसा आचरण करते हैं वैसा ही छोटे लोग भी आचरण करते हैं।

६.यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता: - मनुस्मृति
जहां स्त्रियों का समादर होता है वहां देवता निवास करते हैं।

७.याचनान्तं हि गौरवम् - सभारंजनशतकम्
याचना करने से गौरव का विनाश हो जाता है।

८.याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा - मेघदूतम्
गुणवान पुरुष के पास याचना का विफल हो जाना अच्छा परन्तु अधम पुरुष से याचना की पूर्ति अच्छी नहीं होती है।

९.याथार्थ्यान्नहि भुवने किमप्यसाध्यम् - भागवत पुराण
यथार्थता पर रहने वाले के लिए संसार में कोई वस्तु असाध्य नहीं होती है।

१०.यान्ति न्याय प्रवृत्तस्य तिर्यंचोऽपि सहायताम् - अध्यात्मरामायणम्
जो मनुष्य न्याय के पथ पर चलता है उसकी पशु- पक्षी भी सहायता करते हैं।

नैतिक शिक्षा - श्लोक:

न विषादे मन: कार्यं विषादो दोषवत्तर:।
विषादो हन्त पुरुषं बालं क्रुद्ध इवोरग:।।
- वाल्मीकि रामायण "किष्किन्धाकाण्ड"

अर्थात् : मन को विषादग्रस्त नहीं बनाना चाहिए,विषाद में बहुत बड़ा दोष है। जैसे क्रोध में भरा हुआ सांप बालक को काट खाता है, वैसे ही विषाद पुरुष का नाश कर डालता है।

अतिथि लेखक

राष्ट्रसेवापराङ्मुख:

स्वोदरपूर्तये येन सर्वकर्माणि केवलम्।
क्रियन्ते प्रोच्यते सोऽयं राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।१।।

संस्कृतं यो न जानाति यो न जानाति संस्कृतिम्।
कथयन्ति जनास्तं हि राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।२।।

राष्ट्रियं चिन्तनं यस्य नैव सामाजिकं स वै।
स्वार्थपूर्णानि कार्याणि राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।३।।

वेतनं राजकीयं यो लभते पूर्णत: स्वयम्।
विना कार्यं स पापात्मा राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।४।।

अहोरात्रमहो देशं कृतघ्नो योऽत्ति सर्वत: ।
देशस्थोऽपि सदा सैव राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।५।।

सर्वं स्वजीवनं नित्यं देशाय यो ददात्यहो।
एतादृशो जनो नैव राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।६।।

सर्वं धनं मनो देहम्मातृभूम्यै समर्प्य स:।
सपर्यां कुरुते नो यो राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।७।।

देशभक्तौ स्थितो यो हि देशभक्तान् प्रशंसति।
नैव चैतादृशो भक्तो राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।८।।

भारतीयार्यमर्यादां संस्कारांश्च विशेषत:।
यो रक्षति स नैवास्ति राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।९।।

परम्परां च वेदानां संस्कृतशास्त्रसेविनाम्।
सेवते यस्स नैवास्ति
राष्ट्रसेवापराङ्मुख:।।१०।।

- डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU)नई दिल्ली

पुस्तक- परिचय: क्रमांक: - 24

श्रीमद्वाल्मीकि - रामायणम्

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्।।

" एकश्लोकी - रामायणम् "

आदौ राम - तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही - हरणं जटायुमरणं सुग्रीव - सम्भाषणम् ।
बालिनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं
पश्चात् रावण - कुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम्।।

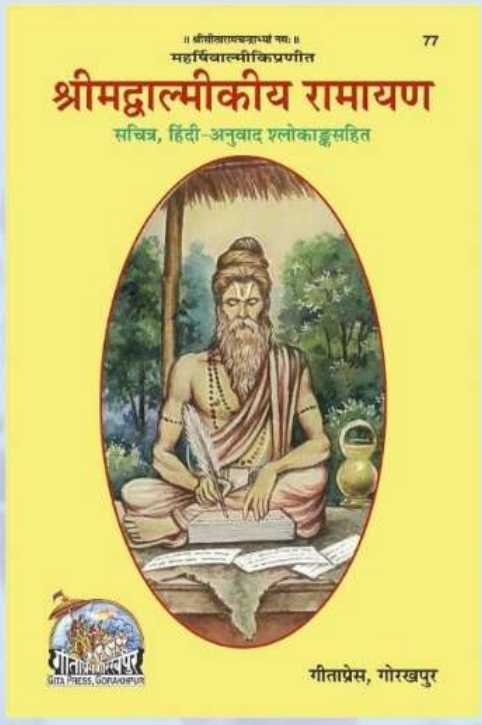

भारतीय साहित्य में रामायण का नाम अमर है। एक दिन रामायण अपने निर्माता महर्षि वाल्मीकि मुनि की कृति रही होगी लेकिन आज वह भारत के करोड़ों नर- नारियों का कंठ हार बन गई है। इस देश के जनजीवन के साथ वह ऐसी घुलमिल गई है कि उसको अलग किया ही नहीं जा सकता है। रामायण में एक ओर तो अपनी निर्माता की ऊंची प्रतिभा का दर्शन होता है तो दूसरी और जिस धरती पर उसका निर्माण हुआ उसका सब कुछ उसमें देखने को मिलता है।

एक प्रकार से इस देश और इसके निवासी करोड़ों लोगों की तस्वीर, संस्कृति उसमें देखने को मिलती है। रामायण को आदिकाव्य और महाकाव्य कहा गया है। आदिकाव्य इसलिए कि संस्कृत में कविता का वरदान उसी से मिला, महाकाव्य इसलिए कि हमारे इतिहास के सबसे बड़े आदर्श महापुरुष की पूरी कथा उसमें कही गई है। लेकिन न तो महाकाव्य और ना आदिकाव्य बल्कि भारतीय परिवारों में उसे एक धर्मग्रंथ के रूप में पूजा तथा अपनाया जाता है। उसमें इस देश की जनता का जीवन बोलता है, उसकी सर्वोच्च कल्पनाएं और मान्यताएं उसमें गुथी हुई है। भक्ति ज्ञान और भाईचारे के जो पुराने आदर्श हैं, उनको उसमें व्यक्त किया गया है।

एक बार विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था "रामायण" में धरती की बातें खूब खोलकर बताई गई हैं। पिता-पुत्र में भाई-भाई में और पति-पत्नी में जो धर्म का रिश्ता है, जो प्रेम भक्ति और आदर का संबंध है, रामायण में उनको विस्तार से बताया गया है। इसलिए सहज ही वह हमारे जीवन में घुल मिल गई है। उसमें हमें अपनापन महसूस होता है।

रामायण की लोकप्रियता के और भी कई कारण हैं, उसमें समाज की, परिवार की, घर-घर की और हर आदमी की बातें कही गई हैं। उसमें जो बातें कही गई हैं, उनसे कोई भी आदमी चाहे वह संसार के किसी भी छोड़ का रहने वाला हो अपना नाता सहज ही जोड़ लेता है। समाज उसमें अपनी तस्वीर देखता है। हर आदमी उसको अपनी कहानी मानता है। युगों- युगों से उसकी यह असलियत बनी हुई है। इसलिए उसे इतना सम्मान और आदर दिया जाता है।

रामायण में राम की कहानी कही गई है, इस राम कथा के बारे में कहा जाता है कि सबसे पहले उसे कविताओं और गीतों के रूप में गाया गया। शहरों में नहीं देहातों या गांवों में आज भी रिवाज है कि किसी असाधारण या अनहोनी घटना को कथाओं और गीतों में बांध दिया जाता है। ये कथाएं और गीत समाज की वाणी में बस जाती हैं। राम कथा भी इसी तरह गाई जाती रही है। इन गीतों और कविताओं को गाने वाले थे इक्ष्वाकु वंश के सूत। पुराणों द्वारा गाये गये गीतों को महामुनि वाल्मीकि ने अपनी लेखनी में ढाला। महामुनि की लेखनी में ढल कर यह रामकथा नये रूप में सामने आई। उसे महामुनि ने रामायण नाम दिया। इस तरह महर्षि वाल्मीकि की रामायण इस देश के करोड़ों नर नारियों के कंठ का हार बनी। कई हजार वर्षों से लेकर अब तक जनजीवन पर उसकी एक जैसी छाप बनी हुई है।

महर्षि वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण में सात काण्ड तथा २४००० श्लोक लिखे हैं। जो रामायण के पात्रों के व्यक्तित्व को आकर्षक तरीके से दर्शाते हैं।

१.बालकांड २.अयोध्याकांड ३.अरण्यकांड ४.किष्किंधाकांड ५. सुंदरकांड ६. युद्धकांड तथा ७. उत्तरकांड

निश्चित तौर पर "रामायण" भारतीय जनमानस के साथ विश्व साहित्य की संपदा है और पारिवारिक महा ग्रंथ है। हम सबको रामायण का अध्ययन करना चाहिए और उसकी अच्छाइयों को जीवन में अपनाना चाहिए।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

- डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की आदर्श सीता...

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुंदरम्
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकं।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुल- तिलकं राघवं रावणारिम्।।

- श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

देवी सीता मिथिला के नरेश राजा जनक की श्रेष्ठ पुत्री थी । इनका विवाह अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र से हुआ था। माता सीता के स्वयंवर में उनके पिता जनक ने शर्त रखी थी कि जो भी राजा शिव धनुष को तोड़ देगा उनके साथ उनकी पुत्री सीता का विवाह होगा। सीता जी पतिव्रता नारी का प्रतीक हैं। हमारे अनेक शास्त्र, आदिकाव्य ग्रंथ रामायण, हमारा आध्यात्मिक इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब- जब इस समाज का कल्याण करने के लिए भगवान अवतरित हुए हैं तब- तब उनका साथ देने के लिए उनकी पार्षद उनकी शक्ति भी अवतरित हुई है। मां सीता का अवतरण भी इस पृथ्वी पर पापी रावण के अंत का कारण बना। लेकिन इस लीला में माता सीता को किन-किन भौतिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा यह सर्वविदित है। प्रतिवर्ष माता सीता का जन्म फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। माता सीता एक आदर्श सम्मानित पुत्री, बहु, धर्मपत्नी, मां और स्वावलंबी नारी थी।
आज की सम्मानित स्त्रियों को भी सीता के गुणों को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। सीता के संघर्षों को पढ़ना और समझना चाहिए।

- अदिति लेखवार, ७ ब, तक्षशिला सदन

पलक्षा. ६ अ, विक्रमशिला सदन

सुहानी भंडारी, ६ अ, विक्रमशिला सदन

खुशी भारद्वाज, ७ अ, पंचशिला सदन

रामायण में उर्मिला का त्याग और सेवा

रामायण में ढेर सारे रहस्य हैं जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। रामायण की अनेक सारी घटनाएँ हैं। आज हम बात कर रहे हैं लक्ष्मण की पत्नी "देवी उर्मिला" की। रामायण में उर्मिला के त्याग सेवा और नि:स्वार्थ भक्ति को कम आंका गया है जबकी सत्य यह है कि उर्मिला का त्याग बहुत बड़ा था,अनमोल था और उनका दु:ख सबसे बड़ा था। वह बेचारी अपने दु:ख पर आंसू भी नहीं बहा पाई।

तो चलिए जानते हैं देवी उर्मिला की त्याग भरी कहानी।

उर्मिला राजा जनक की सुपुत्री और महाराज दशरथ की पुत्रवधू थी। वह माता सीता की छोटी बहन थी। उनका विवाह राजा दशरथ और रानी सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण से हुआ था। राम के वनवास जाने के समय उनकी पत्नी सीता उनके साथ गई थी, उसी प्रकार उर्मिला भी एक पतिव्रता स्त्री की तरह अपने पति लक्ष्मण के साथ जाना चाहती थी लेकिन लक्ष्मण ने उन्हें ले जाने से इंकार कर दिया। उर्मिला चाहती थी कि वह अपने पति की सेवा करे, उनका हर दु:ख सुख में साथ दे, जो कि हर पत्नी चाहती है मगर वह नहीं हो पाया। लक्ष्मण चाहते थे कि उनकी पत्नी अयोध्या रहकर उनके माता पिता का ध्यान रखे।

उनके मुतबिक अगर वह अपनी पत्नी उर्मिला को अपने साथ ले जाते तो भ्राता राम और भाभी सीता का अच्छे से ध्यान नहीं रख पाते। वह नहीं चाहते थे कि उन दोनों की सेवा में कोई कमी रह जाए। जाते हुए लक्ष्मण ने उर्मिला से एक वचन लिया था कि वह उनके वन जाने पर आंसू नहीं बहाएंगी और उनके परिवार का पूरी तरह से ख्याल रखेंगी।

कुछ पुरानी मान्यताओं के मुताबिक लक्ष्मण अपनी पत्नी के नाजुक कंधों में बहुत बड़ा दायित्व डालकर चले गए थे।

यह बहुत ही दु:ख की बात है कि उर्मिला अपने पति के बिना 14 वर्ष रही। कोई भी स्त्री अपने पति के बिना नहीं रह सकती, जबकी उर्मिला 1 नही 2 नही पूरे 14 वर्ष लक्ष्मण के बिना रही। आख़िर इससे बड़ा त्याग क्या हो सकता है। ये उर्मिला का अखंड पतिव्रत धर्म ही था जो उन्होंने कभी किसी की तरफ देखा तक नहीं। फिर भी ये बड़े दु:ख की बात है कि उनके त्याग की चर्चा जितनी रामायण में होनी चाहिए उतनी हुई नहीं। लक्ष्मण के दिए वचन के करण उर्मिला न लक्ष्मण के लिए रो पाई और न ही राजा दशरथ की मृत्यु पर।

उनके पिता महाराज जनक उन्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे ताकि उनकी मां और सखियों के साथ उनका मन बहल जाए और थोड़ा दु:ख कम हो लेकिन उर्मिला ने साफ इंकार कर दिया, वे लक्ष्मण के वचन का पालन करना चाहती थीं। उर्मिला ने कई बलिदान दिए जो कि शायद ही आज की कोई स्त्री कर पाये। जब लक्ष्मण 14 वर्ष के बाद वापस आए तो उन्हें राम से मृत्यु दंड मिल गया। आख़िर बेचारी उर्मिला की गलती क्या थी जो उन्हें ये सब सहना पड़ा।आज की पीढ़ी के लिए उर्मिला का व्यक्तित्व सबसे ज़्यादा सम्माननीय और पूज्यनीय है।

- श्रेया लिंगवाल, ८, पंचशिला सदन

श्रेया नगरकोटी, ५ अ, तक्षशिला सदन

सुदिक्षा, ५ अ, तक्षशिला सदन

होलिकोत्वस्य मंगलकामना: विलसन्तु...

आयुर्धनं शुभ्रयशोवितानं
निरामयं जीवनसंविधानम्।
समागतो होलिकोत्सवोऽयं
ददातु ते मांगलिकं विधानम्॥

इस होली के त्योहार पर आपको लंबी आयु, धन-वैभव, निर्मल यश, निरोगी जीवन और सम्मान मिले। यह होली आपको मंगलमय अधिष्ठान प्रदान करे।

होली के इस महान उत्सव पर आप सभी "ज्योतिर्गमय" मासिक पत्रिका के पाठकों तथा लेखकों को सपरिवार हार्दिक शुभकामनाएं। आप सभी का सदा मंगल हो और आप सभी सदा सुखी तथा स्वस्थ रहें।

- डॉ. गीता शुक्ला

रामायण में एक अद्भुत और अलौकिक घटना...

" जब हंसने लगा था मेघनाद का कटा हुआ सिर " ?

अंशिका नेगी, ७ अ, पंचशिला सदन

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में उल्लेख मिलता है कि रावण के बेटे का नाम मेघनाद था। उसका एक नाम इंद्रजीत भी था। दोनों नाम उसकी बहादुरी के लिए दिए गए थे। दरअसल मेघनाद, इंद्र पर जीत हासिल करने के बाद इंद्रजीत कहलाया और मेघनाद का मेघनाद नाम मेघों की आड़ में युद्ध करने के कारण पड़ा। वह एक वीर राक्षस योद्धा था। मेघनाद, श्रीराम और लक्ष्मण को मारना चाहता था। एक युद्ध के दौरान उसने सारे प्रयत्न किए लेकिन वह विफल रहा। इसी युद्ध में लक्ष्मण के घातक बाणों से मेघनाद मारा गया। लक्ष्मण जी ने मेघनाद का सिर उसके शरीर से अलग कर दिया। उसका सिर श्रीराम के आगे रखा गया।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में उल्लेख मिलता है कि रावण के बेटे का नाम मेघनाद था। उसका एक नाम इंद्रजीत भी था। दोनों नाम उसकी बहादुरी के लिए दिए गए थे। दरअसल मेघनाद, इंद्र पर जीत हासिल करने के बाद इंद्रजीत कहलाया और मेघनाद का मेघनाद नाम मेघों की आड़ में युद्ध करने के कारण पड़ा। वह एक वीर राक्षस योद्धा था।मेघनाद, श्रीराम और लक्ष्मण को मारना चाहता था। एक युद्ध के दौरान उसने सारे प्रयत्न किए लेकिन वह विफल रहा। इसी युद्ध में लक्ष्मण के घातक बाणों से मेघनाद मारा गया। लक्ष्मण जी ने मेघनाद का सिर उसके शरीर से अलग कर दिया। उसका सिर श्रीराम के आगे रखा गया। उसे वानर और रीछ देखने लगे। तब श्रीराम ने कहा, इसके सिर को संभाल कर रखो। दरअसल, श्रीराम मेघनाद की मृत्यु की सूचना मेघनाद की पत्नी सुलोचना को देना चाहते थे।

उन्होंने मेघनाद की एक भुजा को, बाण के द्वारा मेघनाद के महल में पहुंचा दिया। वह भुजा जब मेघनाद की पत्नी सुलोचना ने देखी तो उसे विश्वास नहीं हुआ कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है। उसने भुजा से कहा अगर तुम वास्तव में मेघनाद की भुजा हो तो मेरी दुविधा को लिखकर दूर करो। सुलोचना का इतना कहते ही भुजा हरकत करने लगी, तब एक सेविका ने उस भुजा को खड़िया लाकर हाथ में रख दी। उस कटे हुए हाथ ने आंगन में लक्ष्मण जी के प्रशंसा के शब्द लिख दिए।

अब सुलोचना को विश्वास हो गया कि युद्ध में उसका पति मारा गया है। सुलोचना इस समाचार को सुनकर रोने लगीं। फिर वह रथ में बैठकर रावण से मिलने चल पड़ी। रावण को सुलोचना ने, मेघनाद का कटा हुआ हाथ दिखाया और अपने पति का सिर मांगा।

सुलोचना रावण से बोली कि अब में एक पल भी जीवित नहीं रहना चाहती, मैं पति के साथ ही सती होना चाहती हूं।तब रावण ने कहा, 'पुत्री चार घड़ी प्रतिक्षा करो में मेघनाद का सिर शत्रु के सिर के साथ लेकर आता हूं। लेकिन सुलोचना को रावण की बात पर विश्वास नहीं हुआ। तब सुलोचना मंदोदरी के पास गई। तब मंदोदरी ने कहा तुम राम के पास जाओ, वह बहुत दयालु हैं। सुलोचना जब राम के पास पहुंची तो उसका परिचय विभीषण ने करवाया।

सुलोचना ने राम से कहा, हे राम मैं आपकी शरण में आई हूं। मेरे पति का सिर मुझे लौटा दें ताकि मैं सती हो सकूं। राम सुलोचना की दशा देखकर दुःखी हो गए। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे पति को अभी जीवित कर देता हूं। इस बीच उसने अपनी आप-बीती भी सुनाई। सुलोचना ने कहा कि, मैं नहीं चाहती कि मेरे पति जीवित होकर संसार के कष्टों को भोगें। मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि आपके दर्शन हो गए। मेरा जन्म सार्थक हो गया। अब जीवित रहने की कोई इच्छा नहीं।

राम के कहने पर सुग्रीव मेघनाद का सिर ले आए। लेकिन उनके मन में यह आशंका थी कि कि मेघनाद के कटे हाथ ने लक्ष्मण का गुणगान कैसे किया। सुग्रीव से रहा नहीं गया और उन्होंने कहा मैं सुलोचना की बात को तभी सच मानूंगा जब यह नरमुंड हंसेगा।सुलोचना के सतीत्व की यह बहुत बड़ी परीक्षा थी। उसने कटे हुए सिर से कहा, हे स्वामी! जल्दी हंसिए, वरना आपके हाथ ने जो लिखा है, उसे ये सब सत्य नहीं मानेंगे। इतना सुनते ही मेघनाद का कटा सिर जोर-जोर से हंसने लगा। इस तरह सुलोचना अपने पति की कटा हुए सिर लेकर चली गईं। **- कृष्णमंदीप नेगी, ८ ब विक्रमशिला सदन**